आनंदस्वरूप श्रीवास्तव
कवितांगन, एम-2/85
जवाहर विहार
रायबरेली (उ.प्र.) 229ो
मो.`93572 51

जीवन संघर्षों की दास्तान- वांड्चू

'यार किस बूदम को उठा लाए हो? यह क्या चीज है? कहां से पकड़ लाए हो इसे? मेरे एक मित्र ने कहा।''

''बाहर का रहने वाला है, इसे हमारी बातों में कैसे रुचि हो सकती है। मैंने सफाई देते हुए कहा।''

भीष्म साहनी का यह 'बूदम' और कोई नहीं बौद्ध भिक्षु वांड्चू है जो चीन से भारत आया था। यह एक संस्मरणात्मक कहानी है जो गहरी मानवीय संवेदनाओं से सम्पृक्त है। इस कहानी को पढ़कर यह सहर्ष निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भीष्म साहनी मानव मन की पीड़ा और संवेदना को बहुत गहरे जाकर समझने और परखने वाले कथाकार हैं।

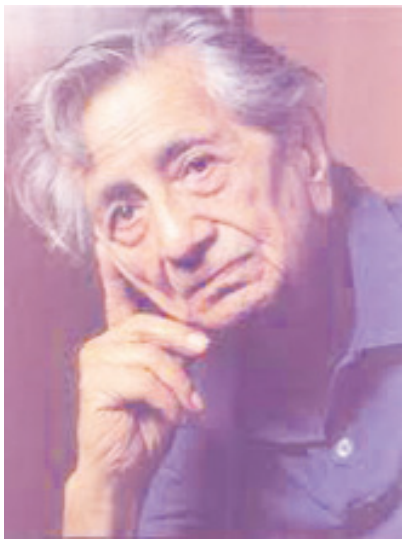

वांड्चू का पहला पाठ कश्मीर के श्रीनगर से शुरू होता है। उस वक्त देश में स्वातंत्र्य आंदोलन शीर्ष पर था अैर राजनीति में कांग्रेस का बोलबाला था। वाड्चू लेखक से एक बौद्ध भिक्षु की तरह मिला। श्रीनगर की लालमंडी सड़क पर। उसका सिर घुटा हुआ था। शरीर पर लाल रंग का धूसर चोगा था। श्रीनगर शहर में आकर वह बौद्ध विहारों के खंडहरों और संग्रहालयों में घूम रहा था। वह इन्हें बड़े करीब और मन से देख रहा था। एक संग्रहालय के बाहर जब वह निकलता है तो लेखक से टिप्पणी करता है-'एक मूर्ति के केवल पैर ही पैर बचे हैं।'

उन्हीं दिनों पं.नेहरू श्रीनगर आए थे। उन्हें देखने के लिए बड़ी भीड़ उमड़ी थी। वह कुछ पल नेहरू जी को व भीड़ को देखता रहा फिर एकाएक गायब हो गया और पास के एक संग्रहालय में चला गया। यह बात लेखक के मित्रों को अच्छी नहीं लगी। उन लोगों ने वांड्चू पर प्रश्न किए- कौन है यह? कहां का रहने वाला है? यहां क्यों आया है? लेखक उनकी शंकाओं का समाधान करता है और बताता है कि वह समझदार आदमी है और बौद्ध धर्म के बारे में बहुत कुछ जानता है। लेखक के मतानुसार वांड्चू भक्त अधिक और जिज्ञासु कम था।

वांड्चू वर्षों पहले चीन से सारनाथ आया था। जिन बौद्ध प्रोफेसर के साथ वह आया था वह तो कुछ साल बाद चीन लौट गए परन्तु वह यहीं रह गया। सारनाथ में रहकर उसने हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन किया। वह स्वभाव से अर्न्तमुखी था। वह न इस देश की और न अपने देश की राजनीति में कोई रुचि लेता। यह बात सबको कुछ हैरान सी करती।

वांड्चू उन दिनों कोई एक सप्ताह लेखक के घर पर ही रहा। वहां उन्हीं दिनों उनकी छोटी मौसेरी बहन नीलम ठहरी हुई थी। शीघ्र ही दोनों में बड़ी अन्तरंगता बढ़ गई। बाजार से दोनों एक दूसरे के लिए गिफ्ट भी लाने लगे। लेखक ने लिखा है- नीलम जब कोई हंसी-ठिठोली करती तो उसके कान भूरे हो जाते और चेहरा लाल।

एक सप्ताह बाद वांड्चू सारनाथ लौट आता है। उसके जाने के बाद घर के सभी लोग